और धाम अछरातीत, नूरतजल्ला अर्स।
रूह बड़ी ब्रह्मसृष्ट की, जो है अरस-परस।। १०७ ।।

परमधाम और अक्षरातीत को कुरान में नूर तजल्ला और अर्शे अजीम कहते हैं। यहां पर बड़ी रूह श्री श्यामा महारानी और ब्रह्मसृष्टियों का अद्वैत सम्बन्ध है, अर्थात् एक ही तन है और एकदिली है।

ए लीला सब प्रगट करी, महंमद ईसा बुध जी आए।
ए तीनों सरूपों मिल के, सबको दिए जगाए।। १०८ ।।

रसूल मुहम्मद, मलकी मुहम्मद (श्री देवचन्द्रजी) और नूरी मुहम्मद (श्री प्राणनाथजी) तीनों स्वरूपों के मिलने पर सबके संशय मिट गए और सबको परमधाम की लीला का रहस्य मालूम हो गया।

भिस्त दई सबन को, चढ़े अछर नूर की दृष्ट।
कायम सुख सबन को, सुपन जीव जो सृष्ट।। १०९ ।।

जीवसृष्टि जो सपने की है उसको अक्षर की नूरी नजर (योगमाया) में बहिश्तें कायम कर अखण्ड कर दिया।

दूजी सृष्ट जो जबरूती, जो ईश्वरी कही।
अधिक सुख अछर में, दिल नूर चुभ रही।। ११० ।।

दूसरी सृष्टि जो ईश्वरीसृष्टि है, जिसका घर अक्षरधाम है, उनको भी नित्य अखण्ड सुख प्राप्त हुआ।

और उमत जो लाहूती, ब्रह्मसृष्टी घर धाम।
इन को सुख देखाए के, पूरन किए मन काम।। १११ ।।

ब्रह्मसृष्टियां, जो परमधाम की हैं जिनको कुरान में लाहूती उम्मत कहा है, इनको खेल के सुख दिखाकर इनकी मनोकामनाएं पूरी कीं।

मुक्त दई त्रैगुन फरिस्ते, जगाए नूर अछर।
रूहें ब्रह्मसृष्ट जागते, सुख पायो सचराचर।। ११२ ।।

ब्रह्मा, विष्णु, महेश को मुक्ति दी और इनको अक्षर के अव्याकृत में अखंड किया। मोमिनों ने जागकर के जिस संसार को देखा, वहां के चल-अचल सभी प्राणियों को अखण्ड सुख दिया।

करनी करम कछू ना रह्या, धनी बड़े कृपाल।
सो बुधजीएं मारया, जो त्रैलोकी का काल।। ११३ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज बड़े कृपालु हैं। उन्होंने बिना तपस्या, कठोर साधना की करनी के सबको अखण्ड मुक्ति प्रदान की। श्री प्राणनाथजी (बुधजी) ने तीनों लोक (मृत्यु, स्वर्ग, बैकुण्ठ) अर्थात् चौदह लोकों को अखण्ड कर दिया और सबके जन्म-मरण का चक्कर समाप्त कर दिया।

॥ प्रकरण ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ ७५५ ॥

कुरान की कहूं

अब कहूं कुरान की, सब विध हकीकत।
मगज मायने खोले बिना, क्यों पाइये मारफत।। १ ।।

श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि अब कुरान के यथार्थ ज्ञान को बतलाता हूं। इसके गुझ (गुप्त) छिपे रहस्य खोले बिना परमधाम के मारफत का ज्ञान, अर्थात् पारब्रह्म की पहचान सम्भव नहीं है।

Nijanand App

बिध सारी यामें लिखी, जाथें न रहे अग्यान।
माएने ऊपर के लेय के, कर बैठे अपना कुरान।। २ ।।

कुरान में सब बातें इस तरह से लिखी हैं जिससे कोई अज्ञान रह ही नहीं सकता, परन्तु जाहिरी मुसलमान ऊपर के अर्थ लेकर कुरान को अपना मान बैठे हैं।

आरबों सों ऐसा कह्या, कागद ए परवान।
आवसी रब आलम का, तब खोलसी कुरान।। ३ ।।

रसूल साहब ने अरब के लोगों से कहा था कि यह कुरान खुदाई सन्देश है, इसलिए जब सारे संसार के मालिक पारब्रह्म आएंगे तो इसके रहस्य खोलेंगे।

कागद में ऐसा लिख्या, आवेगा साहेब।
अंदर अर्थ खोलसी, सब जाहेर होसी तब।। ४ ।।

कुरान में ऐसा लिखा है कि पारब्रह्म अवश्य ही आएंगे और जब वह अन्दर के बातून अर्थ खोलेंगे तो सब कुछ जाहिर हो जाएगा और किसी का कोई संशय नहीं रह जाएगा।

दुनियां चौदे तबकों, और मिलो त्रैगुन।
माएने मगज मुसाफ के, कोई खोले न हम बिन।। ५ ।।

दुनियां के चौदह लोक मिल जाएं और त्रिदेव भी मिल जाएं तो भी कुरान के छिपे भेदों को हमारे बिना कोई खोल नहीं सकता।

धनी माएने खोलसी, सत जानियो सोए।
साहेब बिना ए माएने, और खोल न सके कोए।। ६ ।।

पारब्रह्म ही कुरान के रहस्यों को खोलेंगे यह तुम सत्य मानना। पारब्रह्म के बिना इन रहस्यों को कोई नहीं खोल सकता।

नाम सारे जुदे धरे, ऊपर करी इसारत।
फुरमान खोल जाहेर करे, धनी जानियो तित।। ७ ।।

सभी ने पारब्रह्म के जुदा-जुदा नाम धारण कर आने का संकेत दिया है और कहा है कि कुरान के भेद जो खोलेगा वही पारब्रह्म सच्चिदानन्द है।

गुझ अर्थ यामें लिखे, सो समझे कैसे कर।
अर्थ ऊपर का लेय के, अकस लेत दिल धर।। ८ ।।

कुरान में खुदा, पारब्रह्म और परमधाम के सब भेद छिपे हैं। बाकी सब उनको कैसे समझ सकते हैं? यह सब ऊपर के जाहिरी अर्थ लेकर दिलों में दुश्मनी ले लेते हैं।

बड़ी सोभा अहेल किताब की, लिखी मिने कुरान।
सो आरब जाने आपको, ए जो धनी फुरमान।। ९ ।।

कुरान के बीच कुरान के वारिस (मोमिनों) की बड़ी महिमा लिखी है। यह सब अरब के लोग अपने आपको खुदा का फुरमान और कुरान का अपने को वारिस मानते हैं।

अहेल किताब जानें आपको, और सब जाने कुफरान।
फजर होसी माएने खुले, तब होसी पेहेचान।। १० ।।

यह अपने आपको कुरान का वारिस कहते हैं और सबको काफिर कहते हैं। कुरान के छिपे भेदों का रहस्य खुलकर सवेरा होगा। तब पता चल जाएगा कि इसका सच्चा वारिस कौन है।

Nijanand App

एक खासी उमत रूहन की, सो गिनती बारे हजार।
ए आरब तो अनगिनती, नहीं करोरों पार।। ११ ।।

मोमिनों की गिनती कुरान में बारह हजार लिखी है। अरब के मुसलमान तो संख्या में बेशुमार (अनगिनत) हैं।

एता भी न विचारहीं, होए खावंद बैठे सब।
फैल न देखें अपने, लिया मोमिनों का मरातब।। १२ ।।

वह इतना भी विचार नहीं करते और मोमिनों का दावा लेकर कुरान के मालिक बने बैठे हैं। अपने कर्मों को देखते नहीं हैं और मोमिनों का दावा लिए बैठे हैं।

सहूर न करें दिल से, कह्या नाजी फिरका एक।
और बहत्तर नारी कहे, पर पावें नहीं विवेक।। १३ ।।

दिल से सोचते भी नहीं हैं और कहते हैं कि हम नाजी फिरका हैं, पर कुरान में तो नाजी फिरका एक होगा, ऐसा जिकर आया है। और बहत्तर फिरके नारी (दोजखी) कहे हैं। उन्हें इसकी खबर नहीं है कि नारी कौन है और नाजी कौन है?

लिख्या है कुरान में, कुलफ किए दिल पर।
परदा कानों आंखों पर, तो न सके अर्थ कर।। १४ ।।

कुरान में लिखा है कि जाहिरी अर्थ लेने वालों के दिलों पर ताले लगे हैं, अर्थात् आंखों और कानों पर परदा पड़ा है, इसलिए वह बातूनी अर्थों तक नहीं पहुंच सके।

कागद एक उमत का, और हुआ झूठों सों छल।
माएने जब जाहेर भए, तब भाग्यो झूठों बल।। १५ ।।

कुरान केवल नाजी फिरके के वास्ते आया है। जब इसके छिपे भेदों का रहस्य जाहिर हो गया तो झूठे दावेदारों का दावा झूठा हो गया। झूठे दावेदार का कोई बल न रहा।

एह विध साख कुरान में, जाहेर लिखी हकीकत।
सो धनी आए जहूदों मिने, ओ आरबों में ढूंढ़त।। १६ ।।

इस तरह से कुरान में गवाही लिखी है कि पारब्रह्म तो हिन्दुओं में आ गये हैं, लेकिन अभी भी लोग अरब में उनके आने का इन्तजार कर रहे हैं।

परदा लिख्या मुंह पर, वास्ते आवने हिंदुओं माहें।
जाहेर परस्त जो आरब, सो इसारत समझत नाहें।। १७ ।।

खुदा के मुंह पर परदा होगा। इसका मतलब है कि वह हिन्दुओं में आएंगे, किन्तु जाहिरी अर्थ करने वाले इसका भेद नहीं समझते।

॥ प्रकरण ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ ७७२ ॥

कुरान के निसान कयामत के जाहेर हुए

बरस नब्बे हजार पर, गुजरे एते दिन।
कयामत लिखी कुरान में, सो ए न पाई किन।। १ ।।

रसूल साहब के जाने के बाद एक हजार नब्बे वर्ष (सम्वत् १७३५) बीतेंगे, कुरान में लिखा है तब कयामत होगी। इस संकेत को कोई समझ नहीं सका।

Nijanand App